International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 86-88

संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना के सन्दर्भ में आधुनिक कवि डॉ. राधेश्याम गंगवार के साहित्य की विवेचना

पिंकी तिवारी

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

प्रस्तावना

प्रकृति का आकर्षण मानव में नवीन स्फूर्ति ला देता है, और उसके मन में व्याप्त नैराश्य का लोप हो जाता। मनुष्य प्राचीन काल से लेकर आज तक सौन्दर्य के प्रति आकर्षित रहा है, जिसमे प्रकृति सौन्दर्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय महाकाव्य परम्परा में प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरण संरक्षण निरंतर प्रवाहपूर्ण रहा है, कवि ने अपने महाकाव्य तथा मुक्तक काव्य में प्रकृति और पर्यावरण का स्वरूप दर्शाया है, प्राचीनकाल से लेकर से आज तक मानव प्रकृति के सानिध्य में पलता एवं बढता रहा और स्वंय को प्रेरित भी करता रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति एवं पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति को मानव की चिरसहचरी कहा गया है जिसका मूल रूप प्रकृति में व्याप्त हो उसी की कल्पना की जाती है, अन्यथा नहीं। मानव निर्मित प्रत्येक वस्तु की प्रेरणा का मूल स्रोत प्रकृति है "प्रकृति के विशाल प्रांगण में जन्म लेने वाले मानव को जैसे – जैसे प्राकृतिक सानिध्यबोध होता गया, वैसे–वैसे वह उसके कोमल एवं कठोर, मंगलकारी एवं प्रलयंकारी रूपों को देख कर रसमग्न, चमत्कृत एवं आत्मविभोर होता गया। सर्वत्र व्याप्त प्रकृति का महत्त्व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुभूत होता है, मनुष्य स्वंय प्रकृति की अदुभुत संरचना है, यह प्रकृति अव्यक्त ब्रम्ह का व्यक्त प्रसार है।"[१]

प्रकृति चित्रण महाकाव्य का अपरिहार अंग है, साहित्य शास्त्रियों ने इसका अनुकरण किया है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार –

सन्ध्या– सूर्येदु–रजनी– प्रदोष–ध्वान्त वासराः
प्रार्तध्याहन– मृगया शीतर्तुवन – सागराः
वर्णनीया यथायोंग सांगोपांग अभी इह।।[२]

संस्कृत साहित्य के आदि कवि वाल्मीकि का प्रकृति प्रेम उनके काव्य में मुखरित हुआ है। इसके उपरान्त महाकवि कालिदास, श्रीहर्ष माघ,सुबंधु आदि कवियों ने प्रकृति को हृदयहारी चित्रण अपने–अपने काव्यों में किया है। प्रकृति के उपासक महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रकृति को उपादान बनाया। जिसका उदाहरण निम्नवत है–

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु संनद्धम्।।[३]

कवि गंगवार ने अपने काव्य में प्रकृति को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने शरद् और ग्रीष्म ऋतु का भी अद्भुत् वर्णन किया है।

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है, परि + आवरण, जिसमे परि का अर्थ है चारों तरफ और आवरण का अर्थ है घेरा। डॉ. बद्रीनाथ कपूर इसकी वैज्ञानिक परिभाषा देते है– "आस– पडोस की परिस्थितियाँ और उसके प्रभाव से समीकृत करते है। "परि" संस्कृत का उपसर्ग है, जिसका अर्थ अच्छी तरह और आच्छादन भी है, आवरण का शाब्दिक अर्थ ढकना, छिपना, घेरना, चहारदीवारी है। यद्यपि शाब्दिक अर्थ से इसका पूर्ण अभिप्राय प्रकट नही होता, तथापि इसका मूल अर्थ इसमें समाकृत है।"[४]

भारतीय संस्कृत साहित्य में पर्यावरण शब्द का प्रयोग "परिधि" और परिवेश के रूप में प्राचीनकाल से होता रहा है। अथर्ववेद में परिधि (पर्यावरण) को निम्नवत परिभाषित किया गया है–

सर्वो वे तत्र जिविति गौरवः पुरुषः पशुः
यत्रेदं ब्रहम क्रियते परिधि जिवानायाकम्।[५]

अर्थात् गो, अश्व एवं पशु आदि सभी प्राणियों के जीवन के लिए परिधि अत्यावश्यक है।

ईशावास्योपनिषद का प्रथम मंत्र ही पर्यावरण को समर्पित है–

ईशावास्यामिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत
तेन व्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।[६]

वायु, जल, वनस्पति, मृदा, पेड़–पौधे, प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग कहलाते है और इन्ही के द्वारा पर्यावरण का निर्माण होता है, जीव सृष्टि एवं वातावरण का पारस्परिक सम्बन्ध ही पर्यावरण है। पर्यावरण प्रकृति–दत्त है।

आज पर्यावरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, फिर भी इसके प्रति लोगों में जागरूकता की कमी है, जबकि यह पूरे समाज से घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाला है। इसलिए लोगों को इसके प्रति जागरूक रहना अत्यावश्यक है। पर्यावरण का प्रकृति से सीधा सम्बन्ध है। वर्तमान समय मे जहाँ एक ओर मानव ने अपनी बुद्धि–विवेक के द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में नये–नये आविष्कार किये हैं वही दूसरी ओर उसी से मानव प्रभावित भीं हो रहा है। आज वैज्ञानिक युग में प्रदूषण एक अभिशाप बन गया है। संपूर्ण विश्व एक चुनौती के दौर से गुजर रहा है। आज पर्यावरण से सम्बद्ध ज्ञान को व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि समस्या को मानव सुगमतापूर्वक समझ सके, ऐसी स्थिति में समाज को उसके प्रति कर्तव्यों का ज्ञान आवश्यक है। इसके द्वारा पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता आयेगी। जीव–जगत में मानव सबसे अधिक सचेतन प्राणी है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य जीव–जंतुओं, पेड़–पौधे, वायु–जल तथा भूमि पर निर्भर होता है। इसलिए मानव को पर्यावरण के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए मानव को उसके उपाय खोजने होगे जिसके द्वारा सुलभ जन जीवन की कल्पना की जा सकेगी। संस्कृत साहित्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि पर्यावरण कि रक्षा हेतु मानव का सहयोग बहुत ही आवश्यक है। पर्यावरण के महत्व को साहित्यिक, सामाजिक और वैज्ञानिक स्तरों पर स्वीकारा गया है। प्राचीनकाल में जो ऋषि मुनि यज्ञादि कर्म करते थे वह पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए होते थे।

आदिकवि वाल्मीकि के द्वारा पर्यावरण चेतना मुखरित हुई, इसका उदाहरण "क्रौञ्च द्वंद्ध वियोगोत्थशोकः" श्लोक के रूप में परिणित

हुआ। और यही रामायण का मूल है। जिसका उदाहरण निम्नवत है–

यथा–मानिषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवर्धाः काममोहितम्।।

वाल्मीकि के इस पद्य में गुम्फित पर्यावरण चेतना को देखकर ही ध्वन्यालोक प्रणेता आचार्य आनंदवर्धन ने उदाहरण दिया है–

काव्यस्यात्मा स एवर्थास्तथा चादिकवेः पुरः
कौंचद्वंद्व वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वभागतः।।[७]

इसी प्रकार डॉ० राधेश्याम गंगवार ने भी अपने मुक्तक काव्य कविस्तवः में इसका विवेचन किया है–

पवित्रतीरे तमसाभिषिक्तः
शुश्राव रावं करुणं कदाचित।
विपद्यमानं विहगं विलोक्य
गतं विदीर्ण हृदयं तदीयम्।।
तत्क्रौंचयुग्मस्य वियोगजन्य
उदीरितश्लोकमवाप शोकः
निषाद मास्मत्वमगाः प्रतिष्ठां
निगद्य जातो भुवनेषु वन्द्यः।।
प्रशस्तवृत्तं करुणार्द्रचित्त
मध्यात्मदर्शं सुतरां समीक्ष्य
विश्वस्यभूत्यै भुवि रामकाव्यं।
ब्रह्मा विधातुं स्वयमादिदेश।।[८]

इन श्लोकों के माध्यम से कवि की पर्यावरण चेतना मुखरित होती है।
इसी प्रकार चंद्रगुप्तचरितम् महाकाव्य में कवि ने पर्यावरण चेतना के प्रति जागरूकता दिखाई है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

पुरातनं पाटलिपुत्रराज्यं
यथाऽधुना नान्तरयो विपन्नम्।
प्रदूषितं कर्दमसन्निविष्टं
जुगुप्सितं नापि विगन्धगंधि।।[९] १/४७ च०

पाटिलपुत्र नगर विघ्नबाधाओं से रहित, प्रदूषण से रहित था।
"भारत मे कई बड़ी– बड़ी सड़के मौर्य शासन मे बनी। उनके दोनों तरफ छायादार वृक्ष लगवाये गये। थोड़ी– थोड़ी दूर पर यात्रियों की थकान दूर करने के लिये धर्मशालाये बनवायी गयी थी, उसमें जल प्रदान करने के लिये वापी और कुएँ बनवाये गये थे"।[१०]
इससे परिलक्षित होता है कि मौर्यकाल में पर्यावरण के प्रति जागरूकता थी।
चंद्रगुप्तचरितम् में सभी रूपों का दिग्दर्शन किया है, शरद और ग्रीष्म ऋतु का वर्णन मार्मिक है। ग्रीष्म ऋतु का वर्णन इस प्रकार द्रष्टव्य है –

आखुः काको नकुलभुजगौ भूरिमा यो मृगेंद्रो
व्याघ्रश्चीनः शलभविहगौ ग्रामसिंहो विलालः
कह्वों मत्स्यो निखिलजगतस्तस्थुषो भूतवर्गो
धर्माक्रांतः स्म वसति मिथो द्वंद्वभावं विहाय।।[११]

चुहा–कौआ, नेवला –साँप, सियार–सिंह, बाघ–चीन मृग,कीट–पक्षी, कुत्ता–बिल्ली, बगुला–मछली आदि समस्त चराचर जगत के प्राणी गर्मी से व्याकुल होकर परस्पर वैरभाव छोड़कर मित्रवत निवास करने लगे।
ये सभी चराचर जगत के प्राणी भी पर्यावरण चेतना में महत्वपूर्ण स्थान रखते है क्योंकि ये पर्यावरण के अंग माने गए है इनकी मित्रता पर्यावरण चेतना को विकासोन्मुख बनाती है। चंद्रगुप्तचरितम् के चतुर्दश सर्ग में जो युद्ध का वर्णन है। वह भी पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाला है जब योद्धा वर्षाकालीन बादलों की तरह रण में बाण बरसाने लगे तब सम्पूर्ण वातावरण दूषित हो गया। विस्फोटों, शंखध्वनियों, ललकारों और हाथियों की चिग्घाड़ों तथा घोड़ों की हेषाओं से आकाश गूँज उठा। ढोलों की आवाजे, छोड़े गये बाणों तथा कृपाणों की सनसनाहट से मिला विशद निनाद होने लगा।[१२]
यहाँ विस्फोटों से पर्यावरण दूषित हुआ और ध्वनि प्रदूषण भी हुआ। इसके लिए पर्यावरण चेतना की महती आवश्यकता है। युद्ध में मारे गये लोगों के शरीर की दुर्गन्ध से वातावरण को हानि पहुंचती है, इससे अनेकों बीमारियाँ फैलती है। इसके लिए हमें सजगता की आवश्यकता है।
उसके उपरान्त जब चंद्रगुप्त सम्राट बना तब सभी दिशाएँ और उपदिशायें प्रसन्न हुई। आकाश स्वच्छ हुआ धरा प्रदूषणमुक्त हुई।[१३]
यहाँ पर पर्यावरण चेतना का विकसित रूप देखने को मिलता है। इस प्रकार चंद्रगुप्तचरितम् में प्रकृति एवं पर्यावरण का स्वरूप अलग–अलग दृष्टगोचर होता हैं। इसको भावों के माध्यम से समझा जा सकता है।
इसी प्रकार स्वामिश्रद्धानन्दचरितम में भी पर्यावरण चेतना का वर्णन इस प्रकार किया जाता है यथा–
मुंशीराम के पिता नानक ने डाकू के भय से आकाश में फायर करना भी ध्वनि प्रदूषण को उत्पन्न करता है और इससे पशु–पक्षी भी भयभीत हो जाते है, इसलिए पर्यावरण चेतना की आवश्यकता है। कवि के शब्दों में निम्नवत है–

समीक्ष्य सर्वं विषमं विगर्हित
समृद्धपिस्तौलकरो गतज्वरः।
विसृज्य शीघ्रं गुलिका विहायसि
समाजुहावात्मभवं विभाषितः।।[१४] ५/१६

वर्तमान समय में नदियों में बहुत अधिक प्रदूषण व्याप्त है उसमें लोग अनेकानेक प्रकार की गंदगी प्रवाहित कर देते है। लेकिन यदि नदियों को स्वच्छ रखा जाये तो वह बहुत ही लाभकारी है। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है–

धाराप्रवाहाम्बुनिधिं बहन्ती
गृष्माभितप्तं जगदार्द्रयन्ती।
शीते वसंते शिशिरे निदाघे
हंसैः मनुष्यश्च समानसेव्या।।[१५] १/१३

मुक्तक काव्य आह्वानम में पर्यावरण में पर्यावरण चेतना–

प्रधावन्त्यये भूतले चान्तरिक्षे
वमन्ति प्रधूमं ध्वनिं बाहनानि।
भवत्यामयावी तयोः प्राणिवर्गः
प्रदोषावहं जीवनं सर्वमेव।।[१६] ४७/४

इस पृथ्वी पर और अन्तरिक्ष को प्राणिवर्ग के लोग वाहनों से निकलने वाली ध्वनि और धुएँ के द्वारा प्रदूषित करते है, इसके लिए पर्यावरण चेतना की महती आवश्यकता है। हमें ऐसे वाहनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे वातावरण को हानि ना पहुँचे।
इस तरह से स्पष्ट है कि राधेश्याम गंगवार जी ने अपने संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना को प्रमुख स्थान प्रदान किया है। आज पर्यावरण से सम्बद्ध ज्ञान को व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि समस्या को मानव सुगमतापूर्वक समझ सके, ऐसी स्थिति में समाज को उसके प्रति कर्तव्यों का ज्ञान आवश्यक है। इस दिशा में कवि के साहित्य का विशेष योगदान है और इसके द्वारा पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता आयेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुर्जनचरितम् का साहित्यिक एवं एतिहासिक अध्ययन, प्रीतिबाला गुप्ता पृष्ठ संख्या २११
2. साहित्यदर्पण– आचार्य विश्वनाथ परिच्छेद ६ /कारिका ३०२
3. अभिज्ञानशाकुन्तल –कालिदास
4. वैज्ञानिक परिभाषा कोष– डॉ. बद्रीनाथ कपूर पृष्ठ ३२५
5. अथर्वेद ८/२/५५
6. ईशावास्योपनिषद–०१
7. रामकिशोर मिश्र के संस्कृत ग्रंथ –एक अध्ययन–मनोज जोशी पृष्ठ १४० अप्रकाशित ग्रंथ
8. कविस्तवः– क्र. स. १/२, क्र. स. १/३, क्र. स. १/४
9. चन्द्रगुप्तचरितम्–१/४७ पृ.१०
10. चन्द्रगुप्तचरितम्–१/४८ पृ.४६
11. चन्द्रगुप्तचरितम्–५/२१ पृ.६३
12. चन्द्रगुप्तचरितम्–१४/२१–२२ पृ.१८३
13. चन्द्रगुप्तचरितम्–१४/४४ पृ.१८८
14. स्वामिश्रद्धानन्दचरितम्–५/१६ पृ.८०
15. स्वामिश्रद्धानन्दचरितम्–१/१३ पृ.६
16. आह्वानम्–४७/४